शुष्क क्षेत्र में बेर में लगने वाले मुख्य कीट, क्षति एवं पहचान

श्रवण एम हलधर, वी. करुप्पईया, एस. आर. मीना एवं आर. एस. सिंह

केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर

बेर शुष्क क्षेत्र में पैदा होने वाला एक प्रमुख फल है। इसमें पाये जाने वाले गुणों एवं सर्वसुलभ होने के कारण इसे "गरीबों की सेव" की संज्ञा भी दी जाती है। बेर की फसल में कीड़े एवं रोग लगने से फल उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ता है, अतः समय पर इनका नियन्त्रण करना अति आवश्यक होता है। बेर में फल मक्खी, फल छेदक, चेफर बीटिल, माइट, दीमक आदि कीड़ों तथा चूर्णिल आसिता (छाछिया), काला धब्बा, फल सड़न आदि रोगों से नुकसान होता है परन्तु फलों को सबसे अधिक नुकसान फलमक्खी कीट एवं छाछिया रोग के प्रकोप से होता है।

बेर में लगने वाले मुख्य कीट

फल मक्खी (कार्पोमिया वेसुविअना)

यह फल मक्खी बेर की फसल में सबसे विनाशकारी कीट है. इस कीट का प्रकोप शुष्क और अर्ध शुष्क क्षेत्र जैसे कि ओरिएंटल एशिया, मध्य पूर्व व समशीतोष्ण एशिया, चीन और दक्षिण यूरोप में भारत आदि में देखा गया है. इसके प्रकोप से 80 प्रतिशत तक फल को नुकसान होता है.

शुष्क क्षेत्र में, इस कीट से नुकसान सितंबर से शुरू होकर दिसंबर – जनवरी तक होता है। फल सेटिंग की शुरुआत के साथ ही फल मक्खी से नुकसान शुरू हो जाता हैं। इस कीट का मेगट ही फल को नुकसान पहुचाता है व्यस्क नहीं। इसके खाने से फल सडनें लगता है ओर खाने योग्य नहीं रहता है।

पहचानः फल मक्खी के स्कूटम या स्कुटेलम पर काले रंग के निशान होते है तथा पंखों पर पीले और भूरे रंग बैंड पाये जाते है। यह नवंबर से अप्रैल तक दो से तीन पीढ़ियां पूरा कर लेती हैं तथा अपने अंडे, अंडनिधानांग से फल की केविटी में देती हैं। फल मक्खी अपना प्युपा 5 से 7 सेमी. गहरी मिट्टी में देती है ओर प्युपा शुषुप्त अवस्ता में गर्मियों मे मिट्टी में पडा रहता है तथा मेगट लाल भूरे रंग के लुगदी जैसे होते है।

गुठली की ईल्ली (अबैय्स हीमालियांस)

बेर की गुठली की ईल्ली सर्वप्रथम 1993 में भारत के कर्नाटक राज्य में एक नए कीट के रूप देखी गयी. इस ईल्ली को हाल ही में 2008–09 में केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर के प्रायोगिक फार्म में देखी गयी।

क्षतिग्रस्त फल को काटाने पर गुठ्ली में ईल्ली की ग्रब, प्युपा या व्यस्क पाया जाता है। इसकी ईल्ली मटर के सम्मान फलों पर अपनें अडें देती है. अडें से निकली सुण्डी फल की गुठली को खाती है। रसायन का छिड़काव नहीं करते हैं तो 60 से 70 प्रतिशत तक फलों का नुकसान हो जाता है।

पहचानः यह काले रंग का अंडा फल के अंतिम छोर पर देती है। मुँह में स्नाउट (थूथन) पाई जाती है। ग्रब सफेद रंग की होती है। वयस्क का पेट गोल आकार के साथ काले रंग की होती है।

नीली तितली (टेरुकस थियोफ्रेसट्स)

यह कीट उत्तरी और पश्चिमी अफ्रीका, फारस, बलूचिस्तान, हिमालय, पंजाब, पश्चिमी, मध्य और दक्षिणी भारत, सीलोन, असम, ऊपरी बर्मा आदि में पाया जाता है।

इस कीट की लट ही नव पत्तियों को नुकसान पहुचाती हैं व्यस्क नहीं । यह कीट मई से जुलाई माह में बेर के कटाई–छटाई के बाद कोमल पत्तियों व फूलों की कलियों को नुकसान करता है। पत्तियों पर सफेद क्लोरोफिल दिखने लगता है और लंबी धारियाँ पड जाती है।

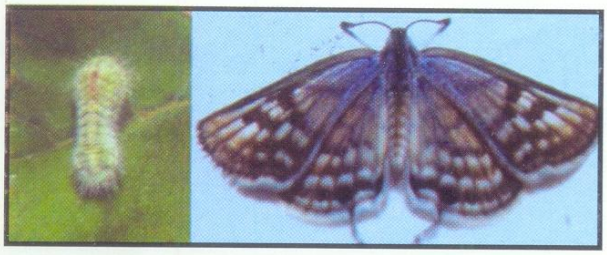

पहचानः मादा तितली के पंख ऊपर से काले भूरे रगं के साथ सतह से नीले रगं के होते है तथा पीछे वालों पखों के पृभट भाग पर एक धागे जैसी पूंछ् होती है। लार्वा का रगं हरा पीला होता है और सिर धुधंला पीला के साथ पूरी तरह से दूसरे खंड के नीचे छिपा हुआ होता है.

फल भेदक (मेरीडारचीस सिरोडस)

यह कीट देश भर में पाया जाता है। राजस्थान में यह सिरोही, जालोर, बाड़मेर और गुजरात के जिलों का प्रमुख कीट है।

इस कीट का लार्वा ही फल को नुकसान पहुचाता है। लार्वा फल के गूदे को खाता है और मल मूत्र इक्कठा कर देता है। इस कीट के द्वारा 40 से 50 प्रतिशत फलों को नुकसान होता है तथा इसका प्रकोप जुलाई से अक्टूबर तक होता है।

पहचानः वयस्क कीट छोटे गहरे भूरे रंग का होता है तथा अंडे नये फलों पर देता है। वयस्क के पखों के पीछे के भाग खुले हुये रहते हैं। प्रारंभिक लार्वा का रगं पीले होता है और पूर्ण विकसित लार्वा लाल रंग का होता है।

छाल का शलभ (इनडार्बेला कुआड्रिनोटाटा)

यह कीट दुनिया भर में पाया जाता है। भारत में चैन्नई, उड़ीसा, मुम्बई, राजस्थान, गुजरात आदि में पाया जाता है।

बेर, आंवला, आम, नींबू, आदि फलों को यह नुकसान पहुचाता है। इसका प्रारंभिक लार्वा पेड़ की छाल को खाता है तथा शाखाओं के कांटे और कोण के निकट स्टेम पर घुमावदार गैलेरी बानाता है। इस कीट की क्षति से कोशिका रस के स्थानान्तरण पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है और पेड़ की फल लगने की क्षमता को प्रभावित होती

है। लार्वा दिन के समय में स्टेम में छिपा रहता है और रात में सक्रिय होकर छाल को खाता है।

पहचानः मादा व्यस्क पीले भूरे रंग की होती है तथा आगे वाले पंखों पर जंग जैसे लाल धब्बे की पंक्ति होती हैं। मादा के पेट की नोक पर बालों का एक गुच्छा होता है। यह बरसात के शुरुआत के साथ ही मादा 15 से 25 के ग्रुप में अंडे देती है। एक स्टेम की गैलरी में एक ही लार्वा होता है।

पत्तियों की ईल्ली (माईलोसेरस डेंटीफर, म. ब्लेंडस और अम्बलीरीह्वस पोरीकोलीस)

बेर के पत्तियों की ईल्ली एक लघुपद कीट है। यह सर्वभक्षि कीट है। इसका वयस्क बेर की पत्तियों को खाता है और क्षति के लक्षण पत्तियों पर अर्दचंद्राकार के होते है।

पहचानः वयस्क अपने अंडे मिट्टी में देती हैं। ग्रब छोटे, सफेद और बिना पैरो के होते हैं तथा पोधे की जडों को खाती हैं। वयस्क पूर्ण रुप से खिले पत्तों को क्षति पहुचाती है।

दीमक (ओडोंटोटर्म्स ओबेसस)

दीमक या सफेद चींटी जो गर्मी का कीट है। यह उष्णकटिबंधीय और समउष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाई जाती है तथा जीवित पौधे के अलावा मृत लकड़ी सामग्री आदि को भी खाती है।

दीमक रेतीले और रेतीले दोमट मिट्टी के लिए गंभीर समस्या है। यह पौधे की जड़ों को नुकसान पहुचाती हैं और मृत लकड़ी के पूरे भाग को खा जाती है। इस कीट से 40–50 प्रतिशत तक पौधे को क्षति हो जाती हैं। पौधों के आंतरिक भाग को 1–2 फीट की ऊंचाई तक खा जाते हैं और स्टेम में मिट्टी भर देते है।